International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 18-21

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 18-21
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-03-2019
Accepted: 14-04-2019

दिगंत बोरा
शोधार्थी, हिंदी विभाग
राजीव गांधी विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, ईटानगर
अरुणाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
दिगंत बोरा
शोधार्थी, हिंदी विभाग
राजीव गांधी विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, ईटानगर
अरुणाचल प्रदेश, भारत

असमिया समाज में लोक-विश्वास

दिगंत बोरा

शोध सारांशिका

लोक-विश्वास का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। ब्रह्मांड में यावत् वस्तुएँ दृष्टिगोचर होती है, इस जगत में जितनी वस्तुएँ उपलब्ध होती है, उनमें से प्रत्येक के संबंध में लोक-विश्वास निश्चित रूप से प्रचलित है। सभी समाज में धर्म, जीव, जन्म, मृत्यु आदि से संबंधित लोक-विश्वास युगों-युगों से चली आ रही हैं। इन लोक-विश्वासों के मूल में मनुष्य के अलौकिक शक्ति के प्रति डर, श्रद्धा और दीर्घ जीवन लाभ की आशा प्रमुख हैं। आदिम समय में बड़े वृक्ष, पत्थर आदि को डर की ड्रष्टि से देखा जाता था, इसी के आधार पर समाज में बहुत सारी धारणाएँ प्रचलित हो गयी थी, जिसे बाद में लोक-विश्वास के रूप में मान्यता मिली। लोक-विश्वास शब्द अंग्रेजी के 'Superstition' का पर्याय है, जिसका अर्थ है 'अलौकिक शक्ति प्रति डर'। 1 आदिम काल से जो विचार या धारणा समाज में प्रचलित है, जिसके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, परंतु समाज के द्वारा उसे मान्यता दिया जाता है, उसे ही लोक-विश्वास कहा जाता है। लोक-विश्वासों का मूल क्षेत्र भले ही निरक्षर समाज है, परंतु आज भी शिक्षित समाजों में लोक-विश्वासों को महत्व दिया जाता है। असम की संस्कृति भारतीय संस्कृति का ही एक अंग है। इसलिए भारतीय समाज की ज्यादातर लोक-विश्वास असम के समाज में भी प्रचलित है। परंतु असम की प्रायः जनजाति अनार्य है, जिनका अपना एक विशेष संस्कृति है। इसलिए इन जनजातीय समाज की निजी अपनी विशिष्ट लोक-विश्वास दिखाई देती है। असम की संस्कृति विविध जनजातियों से मिलकर बना है। जिनमें प्रमुख है- कछारी, गारो, राभा, तिवा, डिमाछा, देउरी, मिरि आदि। इन समाजों में अनेक लोक-विश्वास प्रचलित हैं। असम में प्रचलित लोक-विश्वासों को निम्न रूपों में विभाजित करके देख सकते हैं- जन्म संबंधी, विवाह संबंधी, कृषि संबंधी आदि। कृषि संबंधी लोक-विश्वासों में प्रमुख है- कार्तिक महीने में खेत में दीया जलाना। इसके अनुसार काति बिहु (काति बिहू) के दिन में और उसके बाद खेत में दीया जलाने से खेत अच्छे होते है। इस तरह की लोक-विश्वासों का भले ही कोई तर्कयुक्त आधार नहीं है, परंतु इनसे जनसाधारण का भला ही होता है। क्योंकि काति बिहु के समय धान खेत में फसल बनना शुरू होते, जिसे कीड़ा या अनिष्टकारी पतंग नष्ट कर सकते हैं। यदि काति बिहु और उसके पश्चात खेत में दीपक लगाया जाता है तब पतंग आग को देखकर उसके पास आते है और उसमें जलकर मर जाते है। जिससे से खेत अच्छे होते है । इस तरह से इन लोक-विश्वासों समाज का हित ही होते है।

बीज शब्द: लोक-विश्वास, समाज, जनजाति, काति बिहु, कृषि, संस्कृति, जनजाति, असमिया आदि

प्रस्तावना

लोक-विश्वास का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। ब्रह्मांड में यावत् वस्तुएँ दृष्टिगोचर होती है, इस जगत में जितनी वस्तुएँ उपलब्ध होती है,

उनमें से प्रत्येक के संबंध में लोक-विश्वास निश्चित रूप से प्रचलित है। सभी समाज में धर्म, जीव, जन्म, मृत्यु आदि से संबंधित लोक-विश्वास युगों-युगों से चली आ रही हैं। इन लोक-विश्वासों के मूल में मनुष्य के अलौकिक शक्ति के प्रति डर, श्रद्धा और दीर्घ जीवन लाभ की आशा प्रमुख हैं। आदिम समय में बड़े वृक्ष, पत्थर आदि को डर की दृष्टि से देखा जाता था, इसी के आधार पर समाज में बहुत सारी धारणाएँ प्रचलित हो गयी थी, जिसे बाद में लोक-विश्वास के रूप में मान्यता मिली। लोक-विश्वास और अंधविश्वास दोनों शब्द एक दूसरे के ही पर्याय है। अंधविश्वास शब्द अंग्रेजी के 'Superstition' का हिंदी पर्याय है, 'Superstition' के पर्याय ग्रीक शब्द 'deisidaimonia' का अर्थ है 'अलौकिक शक्ति प्रति डर'। फिर भी लोक-विश्वास और अंधविश्वास में थोड़ी बहुत अंतर है। लोक-विश्वास युक्तिसंगत होते हैं, परंतु अंधविश्वास में कोई तर्क नहीं होते है। फिर भी युगों-युगों से प्रचलित होने के कारण बहुत सारी अंधविश्वास भी लोक-विश्वास में रूपांतरित हो जाती है। जैसे- बारिश का न आना सुखा पड़ना परिस्थितिगत है। परंतु लोक में विश्वास है कि मेढक की विवाह करने से बारिश आयेगी। इसी कारण सुखा पड़ने से असमिया समाज में मेढक की विवाह आयोजित की जाती है। यह एक अंधविश्वास है कि मेढक की विवाह आयोजित करने से बारिश आयेगी। परंतु प्राचीन काल से प्रचलित रहने के कारण यह आज लोक-विश्वास में परिवर्तित हो गयी है।

मूल विषय

आदिम काल से जो विचार या धारणा समाज में प्रचलित है, जिसके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, परंतु समाज के द्वारा उसे मान्यता दिया जाता है, उसे ही लोक-विश्वास कहा जाता है। लोक-विश्वासों का मूल क्षेत्र भले ही निरक्षर समाज है, परंतु आज भी शिक्षित समाजों में लोक-विश्वासों को महत्व दिया जाता है। असम की संस्कृति भारतीय संस्कृति का ही एक अंग है। इसलिए भारतीय समाज की ज्यादातर लोक-विश्वास असम के समाज में भी प्रचलित है। परंतु असम की प्रायः जनजाति अनार्य है, जिनका अपना एक विशेष संस्कृति है। इसलिए इन जनजातीय समाज की निजी अपनी विशिष्ट लोक-विश्वास दिखाई देती है। असम की संस्कृति विविध जनजातियों से मिलकर बना है। जिनमें प्रमुख है- कछारी, गारो, राभा, तिवा, डिमाछा, देउरी, मिरि आदि। इन समाजों में अनेक लोक-विश्वास प्रचलित हैं। कृषि संबंधी लोक-विश्वासों में प्रमुख है- कार्तिक महीने में खेत में दीया जलाना। इसके अनुसार काति बिहु (काति बिहू) के दिन में और उसके बाद खेत में दीया जलाने से खेत अच्छे होते है। इस तरह की लोक-विश्वासों का भले ही कोई तर्कयुक्त आधार नहीं है, परंतु इनसे जनसाधारण का भला ही होता है। क्योंकि काति बिहु के समय धान खेत में फसल बनना शुरू होते, जिसे कीड़ा या अनिष्टकारी पतंग नष्ट कर सकते हैं। यदि काति बिहु और उसके पश्चात खेत में दीपक लगाया जाता है तब पतंग आग को देखकर उसके पास आते है और उसमें जलकर मर जाते है। जिससे से खेत अच्छे होते है। इस तरह से इन लोक-विश्वासों समाज का हित ही होते है।

असम में प्रचलित लोक-विश्वासों को निम्न रूपों में विभाजित करके देख सकते हैं- जन्म संबंधी, विवाह संबंधी, कृषि संबंधी, मृत्यु संबंधी, पशु-पक्षी संबंधी, विविध लोक-विश्वास आदि।

असम में प्रचलित कुछ लोक-विश्वासों का संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित है-

जन्म संबंधी लोक-विश्वास: जन्म संबंधी लोक-विश्वासों में प्रमुख है- जब बच्चा माँ की गर्भ में होता है तब माँ को घर में सफाई करते वक्त कचड़ा जमा करके नहीं रखना चाहिए। माँ को किसी भी प्रकार के रस्सी के ऊपर से नहीं जाना चाहिए। ऐसा करना गर्भस्थ संतान के लिए हानिकारक माने

जाते हैं। इस विश्वास के पीछे के कारण यह है कि यदि बच्चे का माँ घर में कचड़ा जमा करके रखेंगे जब वहाँ पर वाइरास, वेक्टेरिया आदि आ सकते है, जिससे घर के दूसरे व्यक्ति के साथ-साथ माँ को भी बीमार कर सकते है जो माँ के साथ-साथ बच्चे के लिए भी हानिकारक है। यदि गर्भस्थ अवस्था में माँ कभी किसी रस्सी के ऊपर से जाती है, तब जल्दीबाजी में कभी गिर सकते है। जो बच्चे के हानिकारक है।

कृषि संबंधी लोक विश्वास: कृषि संबंधी लोक-विश्वासों में प्रमुख है काति बिहु और काति बिहु के बाद खेत में दीया लगाने से खेत अच्छे होते है। एक और प्रमुख लोक-विश्वास यह है कि खेत से काम करके आकर कृषक थोड़ा सा सोने से खेत अच्छे होते। फसल भर-भर कर होते है। इसका कारण यह है कि खेत में काम सुबह और दोपहर के बाद दोनों समय किया जाता है। यदि कृषक सुबह काम से आकर थोड़ा सा सो लेते है तब वह दोपहर के बाद फिर से मन लगाकर काम कर सकेंगे। जिससे खेत के काम अच्छे से होते है।

मृत्यु संबंधी लोक-विश्वास: मृत्यु संबंधी लोक-विश्वासों में प्रमुख है- यदि मृत व्यक्ति के शरीर को दाह-संस्कार नहीं किया जाता है तब तक उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलती है। इसका कारण यह है कि स्वस्थ अवस्था में कम ही व्यक्ति की मौत होती है। ज्यादातर लोगों की मौत कोई न कोई बीमारियों की वजह से होता है। मृत्यु के बाद भी उस मृत शरीर में उस बीमारी के वीजाणु रह जाते है। इसलिए उन वीजाणु को नष्ट करने के लिए शरीर की दाह-संस्कार करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे जीवाणु नष्ट हो सके।

धर्म संबंधी लोक-विश्वास: धर्म संबंधी लोक-विश्वासों में प्रमुख है- गो पूजा करना। घर में तुलसी के पौधे लगाना मंगलदायक होते है। संध्या के समय शंख बजाने से परिवार में शांति आती है आदि।

असमिया समाज में गाय को भगवान का स्वरूप मानकर पूजा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि गाय को मारना पाप है। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार माँ कष्ट झेलकर अपने दुध पिलाकर बच्चे को बड़ा करता है उसी प्रकार गाय भी हमें अपनी दुध देती है। गाय हमलोगों के एक उपकारी जानवर है।

संध्या के समय शंख बजाना घर के लिए मंगलदायक माना जाता है। इसका कारण यह है कि शंखध्वनि से अनेक अनिष्टकारी कीटाणु-वीजाणु मर जाते है। शंखध्वनि से कलेरा के बीजाणु भी नष्ट हो जाते है। शंखध्वनि जहाँ तक जाते है वहाँ के परिवेश बीजाणुओं से मुक्त रहते हैं।

पशु-पक्षी संबंधी लोक-विश्वास: पशु-पक्षी संबंधी लोक-विश्वासों में कुत्तों का रसोईघर में घुसना अमंगल का प्रतीक है। कुत्ते-बिल्ली का रोना अमंगलदायक है आदि।

असमिया समाज में ऐसा माना जाता है कि कुत्तों का किसी के रसोईघर में घुसना परिवारवालों के लिए अमंगल है। इसी कारण किसी के रसोईघर में कुत्ते घुसने से उस घर के सभी लोक उस दिन उपवास रखते है तथा रसोईघर में रखा हुआ सारे खाद्य पदार्थ बाहर फेंक देते हैं। इसका कारण यह है कि कुत्ते कचरा, मांस आदि खाते है। कुत्ते गंदे जगहों पर भी रहते है। इसलिए कुत्तों के शरीर में बहुत सारी बीजाणु होती है। जब भी कोई कुत्ता किसी के रसोईघर में घुसता है तब उसके शरीर के बीजाणु खाद्य पदार्थ में भी फैल सकते है। जिसए खाने से कोई भी व्यक्ति बीमार पर सकते है। इसलिए उपवास दिया जाता है। ताकि कोई भी व्यक्ति उस दिन कुछ भी न खाय और सभी वर्तन धोकर रख दिया है और अंदर रखें सभी खाद्य पदार्थ बाहर फैके देते है।

कुत्ते-बिल्ली का रोना अमंगल का प्रतीक है। इसका कारण यह है कि कोई भी प्राकृतिक विपदा आने से पहले परिवेश और वायुमंडल में परिवर्तन होते है, जिसे कुत्ते-बिल्ली आदि जानवर पहचान लेते है। इसलिए कुत्ते-बिल्ली का रोना अमंगल है।

विविध लोक-विश्वास: विविध लोक-विश्वासों में हैं कि सूर्य और चंद्र ग्रहण के समय खाना खाना और देखना अमंगल है। इसका कारण है कि सूर्यग्रहण और चंद्र ग्रहण के समय सूर्य और चंद्र पृथ्वी के निकट आ जाते है। जिससे सूर्य के परा बैंगनी किरणे खाना खाते वक्त खाना के साथ हमारे शरीर के अंदर जा सकते है या सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण को देखने हमारे शरीर में प्रवेश कर सकते है, जो हमारे लिए हानिकारक है।

टूटे हुए शीशा या आईना में अपना चेहरा देखना अमंगलदायक है। इसका कारण यह है कि टूटे शीशा में अपना चेहरे देखते वक्त असावधानीवश हमारा हाथ काट सकते है।

रात के समय बालों में कंघी करना अमंगलदायक है। इसके पीछे का कारण यह है कि बालों में कंघी करते समय बाल झड़ सकते है या टूटे हुए बाल गिर सकते है। अंधेरा होने के कारण बालों को हमलोग देख नहीं पायेंगे और वे बाल खाना के साथ मिल सकते है। खाना के साथ वे बाल हमारे शरीर के अंदर जाकर हमें बीमार कर सकते है आदि।

इस तरह हम निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि असमिया समाज में बहुत सारी लोक-विश्वास प्रचलित है जिसका बहुत सारी उपयोगिता भी देखने को मिलती है। इन लोक-विश्वासों को प्राचीन काल में इनके उपयोगिता को देख कर ही बनाया गया होगा, इन लोक-विश्वासों के उपयोगिता के कारण ही इन्हें हम नकार नहीं सकते है । असमिया समाज में हर धार्मिक कार्य या सामाजिक-सांस्कृतिक कार्य के पीछे कोई न कोई लोकविश्वास अवश्य हैं, जिनके महत्व को असमिया समाज में देखा जा सकता है ।

संदर्भ

1. संस्कृति अध्ययन, द्विपेन नाथ, विद्या भवन जोरहाट, द्वितीय संस्करण : २०१४